https://archive.org/details/bk1246/page/n0/mode/1up

2023-09-29 -Khoja Muslims Story - History Tradition and Practices (1246)

All Items on https://archive.org/details/realpatidar

.tidar.com

Khoja Muslims Story; History, Tradition, and Practices | रोजा भी नहीं रखते; न ही मानते रमजान का महीना

Full Library on https://realpatidar.com/library

bhaskar.com/bhaskar-khaas/panth/news/khoja-muslims-story-history-tradition-131909552.html

September 29, 2023

पंथये मुस्लिम हज पर नहीं जाते रोजा भी नहीं रखते न ही मानते रमजान का महीना

एक दिन पहलेलेखक: मनीषा भल्ला

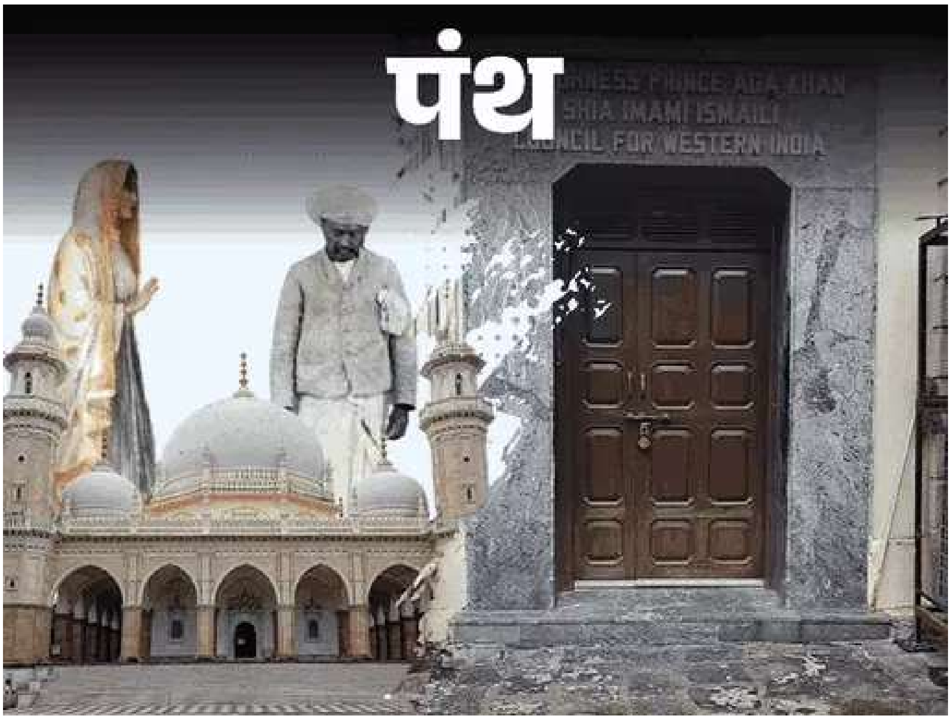

मुंबई में आज तेज बारिश हो रही है। लोकल ट्रेन खचाखच भरी है, सड़कों पर ट्रैफिक जाम है और लोग यहां-वहां आ-जा रहे हैं। मैं भी लोकन ट्रेन में एंटर करती हूं। पंथ सीरीज की स्टोरी के लिए मुझे मुंबई के डोंगरी इलाके में जाना है।

https://archive.org/details/bk1246/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar's mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

Use the Bookmarks facility in the PDF to directly go to the pages containing Highlights.

For Reference See Pages: 2, 3, 4, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13.
For page numbers, see the page footer. Page numbers are in 'Page x of y' format

References by: RealPatidar.com - Created using: step2-QR-and-3-RM-v11.py

Real Patidar
Unravel Truth

Digitally signed by realpatidar.com
DN: cn=realpatidar.com, c=IN,
o=realpatidar.com,
email=mail@realpatidar.com
Reason: I have reviewed this
document
Date: 2026.02.21 11:44:03 +05'30'

realpatidar.com

Khoja Muslims Story; History, Tradition, and Practices | रोजा भी नहीं रखते; न ही मानते रमजान का महीना

bhaskar.com/bhaskar-khaas/panth/news/khoja-muslims-story-history-tradition-131909552.html

September 29, 2023

पंथये मुस्लिम हज पर नहीं जाते रोजा भी नहीं रखते न ही मानते रमजान का महीना

एक दिन पहलेलेखक: मनीषा भल्ला

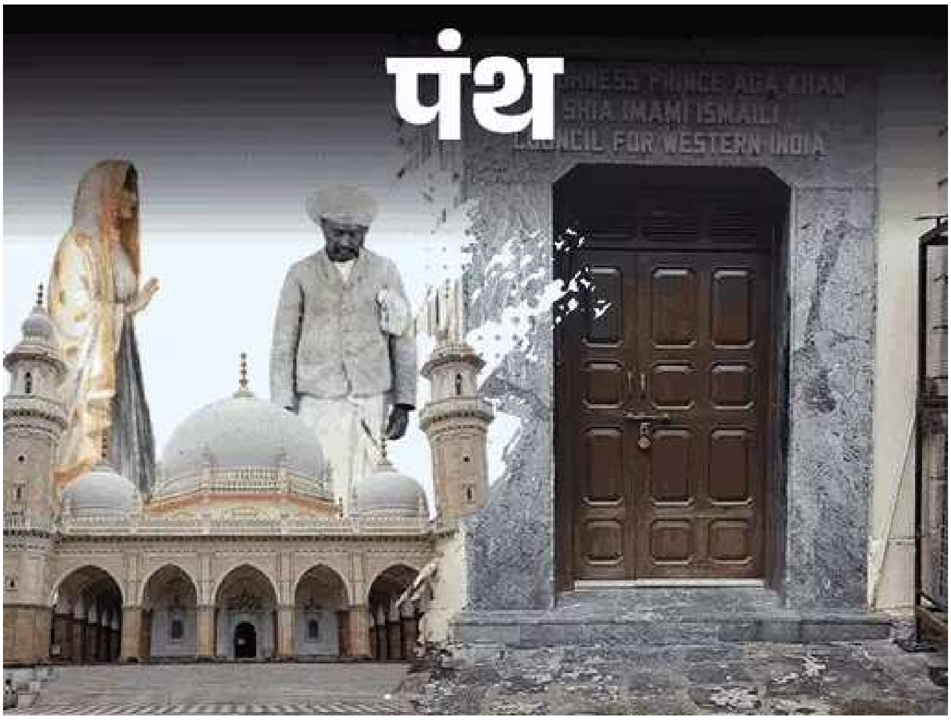

मुंबई में आज तेज बारिश हो रही है। लोकल ट्रेन खचाखच भरी है, सड़कों पर ट्रैफिक जाम है और लोग यहां-वहां आ-जा रहे हैं। मैं भी लोकन ट्रेन में एंटर करती हूं। पंथ सीरीज की स्टोरी के लिए मुझे मुंबई के डोंगरी इलाके में जाना है।

realpatidar.com

इस हफ्ते मैं आगाखानी मुस्लिमों के रिचुअल्स के बारे में जानने निकली हूं। इस सिलसिले में मुझे इसी समाज की एक महिला ने मुंबई का ताजमहल देखने के लिए बुलाया है। कन्फ्यूज मत होइए आप। हसनाबाद में जिस मकबरे को मैं देख रही हूं, उसे मुंबई का ताजमहल ही कहते हैं।

ये शाह हसन अली का मकबरा है। हसन अली इस्माइली मुस्लिमों के 46वें इमाम हैं। मकबरे की वास्तुकला मुगल शैली की है।

realpatidar.com

realpatidar.com

शाह हसन अली का मकबरा, शिया इमामी इस्माइली मुसलमानों की खास धरोहर है। आमतौर पर यहां बाकी मुसलमानों और दूसरे धर्म के लोगों को अंदर जाने की इजाजत नहीं है। अब मैं यहां कैसे पहुंची, इसे आज नहीं आपको बता पाऊंगी।

जैसे ही मैं वहां पहुंची, वो पहले से इंतजार कर रही थीं। मुझसे मिलते ही कहा- या अली मदद।

मैंने जवाब दिया- मौला अली मदद। दरअसल इस मुस्लिम समुदाय में किसी से मिलने पर आदाब, अस्सलामु अलैकुम नहीं कहा जाता है बल्कि 'या अली मदद' कहते हैं।

मैंने पूछा- दूसरे मुस्लिम से इस्माइली मुस्लिम किस तरह अलग हैं?

वह बताती हैं, 'इस्माइली मुस्लिम शिया इस्लाम का एक मस्लक, यानी उप-संप्रदाय है, इसे खोजा मुसलमान, आगाखानी मुसलमान और निजारी मुसलमान भी कहते हैं। ये अनुयायियों के हिसाब से दूसरा सबसे बड़ा शिया उप-संप्रदाय है।

इस्माइली रमजान को नहीं मानते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि साल के 365 दिन खुदा के ही हैं। खुदा के लिए सिर्फ एक महीना क्यों।

इस्माइली मुसलमानों के यहां मस्जिद नहीं होती हैं, बल्कि जमातखाने होते हैं। इनके लिए इमाम का कहा ही आखिरी है। कुरान की व्याख्या को इमाम के जरिए मानते हैं। न तो हज करते हैं न ही जुमा को मानते हैं। रोजे भी नहीं रखते हैं। हमारे समाज में बुर्का या जालीदार टोपी नहीं पहनी जाती है।'

इतना कहने के बाद उस महिला ने मुझे बाहर से हसन अली का मकबरा दिखाया। हसन अली 1800 में ईरान से भारत आए थे।

मकबरे के अंदर लाल रंग की गोटेदार चादर में लिपटी कब्र है, जिसके पास बैठे कुछ लोग तस्बीह (जपमाला जैसा) पढ़ रहे हैं। इसी मकबरे के पास इस्माइली मुसलमानों का जमातखाना है।

इस्माइली मुस्लिम जहां इबादत करते हैं उस जगह को जमातखाना कहते हैं।

इससे पहले मैं कई नामी मस्जिदों के अंदर जा चुकी हूं, लेकिन जमातखानों में इस्माइली मुस्लिम के सिवा किसी को जाने की इजाजत नहीं है।

इसके बाद वह मुझे डोंगरी के जमातखाने ले गईं।

बहुत देर से मेरे मन में सवाल था, आखिरकार मैंने पूछ ही लिया कि आप बुर्का या नकाब नहीं पहनती हैं?

realpatidar.com

realpatidar.com

इस पर वो बोलीं, 'अरे नहीं हम लोग नहीं पहनते हैं। यही नहीं जमातखानों में महिलाएं और पुरुष एक साथ बैठकर इबादत करते हैं।

इस्माइली एकमात्र शिया मुसलमान हैं जिनके पास जीवित, वंशानुगत इमाम है। जीवित इमाम की मौजूदगी ही हमारे समुदाय को अलग बनाती है। इसे आप कुछ उदाहरण से समझ सकती हैं। जैसे- हमारे 49वें इमाम शाह करीम आगा खान ने हमेशा यही कोशिश की कि हमारा समाज दुनिया के दूसरे समुदायों के साथ कदम से कदम मिलाकर चले।'

इस्माइली मुसलमानों के इमाम शाह करीम आगा खान ने इस बात पर खास जोर दिया कि उनके समुदाय के लोग अंग्रेजी बोलना सीखें, खूब पढ़ाई करें और बिजनेस में हमेशा आगे रहें। आधुनिकता अपनाएं।

realpatidar.com

realpatidar.com

वो आगे कहती हैं, 'मॉडर्न वैल्यूज पर चलने का मतलब यह नहीं कि हम इसका गलत इस्तेमाल करें। मजहबी नियमों का सख्ती से पालन करना, आधुनिक शिक्षा को हर कीमत पर हासिल करना, समय के अनुसार जीवन शैली और नियम बदलना, राजनीति और विवादित बयानों से दूर रहना, सिर्फ अपने मजहब, पढ़ाई और बिजनेस पर फोकस करना ये हम आगाखानी इस्माइली मुस्लिम समुदाय की पहचान है। इससे कोई व्यक्ति पीछे नहीं हट सकता।'

realpatidar.com

realpatidar.com

realpatidar.com

realpatidar.com

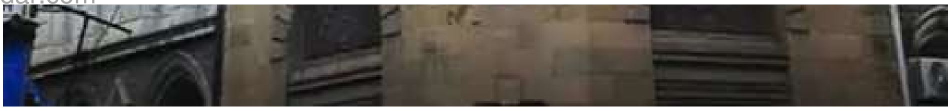

ये मुंबई के डोंगरी इलाके में स्थित इस्माइलियों का जमातखाना है। यहीं महिला और पुरुष एक साथ दुआ करते हैं। यहीं इस्माइली मुस्लिमों की शादी भी होती है।

मैं पूछती हूं कि आपके पूर्वज भारत कब और कहां से आए?

वो बताती हैं, 'इस्माइली मुस्लिम 950 साल पहले अफगानिस्तान के खैबर प्रांत से सिंध प्रांत आए और फिर वहां से भारत आए। हम लोग 50 साल पहले गुजरात के कच्छ और काठियावाड़ में आकर बसे थे। परंपरागत तौर पर आप हमें गुजराती मान सकती हैं, जो बड़ी-बड़ी जमीनों और मिलकियतों के मालिक हुआ करते थे।'

यहां से मैं पहुंची खोजा शिया इसना अशरी जमात मुंबई के प्रेसिडेंट अली श्रॉफ के पास। अली श्रॉफ मुंबई के जाने-माने बिजनेसमैन हैं। वे कहते हैं, 'इस्माइली मुस्लिमों को राजनीतिक विवादों में पड़ने की मनाही है, हमारी परवरिश ही ऐसे हुई है।

निजी जीवन की बात करूं तो गुजरात में मेरे परिवार को नवलक्खा का टाइटिल मिला था। एक समय मेरे परिवार के बुजुर्गों के पास नौ लाख सोने की अशरफियां थीं।'

realpatidar.com

realpatidar.com

अली श्रॉफ के मुताबिक आगाखानी इस्माइली मुसलमान एक समय पर लोहाना हिंदू थे। गुजरात में उस दौर में सूफी संतों का दौर चरम पर था। सूफियों की बदौलत ही ये लोग हिंदू से मुसलमान बन गए।

अली श्रॉफ के अनुसार करीब 1899 में खोजा मुसलमानों के बीच आपसी विवाद हुआ। 1901 में खोजा इस्ना अशरी मुसलमानों ने मुंबई में अपनी अलग जमात बना ली। इसमें चार इस्ना अशरी मुसलमानों को जान की कुर्बानी देनी पड़ी।

realpatidar.com

realpatidar.com

मैं इस बारे में डिटेल में उनसे पूछती हूं। अली श्रॉफ बताते हैं, 'हम सब जानते हैं मुस्लिम समुदाय बड़े स्तर पर तो दो ही फिरकों में बंटा है-सुन्नी और शिया। इस्माइली मुस्लिम यानी आगाखानी खोजा मुसलमान और इस्ना अशरी दोनों ही शिया समुदायों के हिस्से हैं।

इस्ना अशरी लगभग शिया समुदाय की तरह है। इनमें फर्क बस इतना है कि कुछ शिया खुद को सीधे पैगंबर मोहम्मद के नवासे इमाम हुसैन के वंशज मानते है। वहीं इस्ना अशरी आज भी खुद को लोहाना हिंदू मानते हैं।'

अली श्रॉफ आगे कहते हैं कि मक्का और मदीना के बीच गदीर के मैदान में हजरत रसूल अल्लाह ने खुद हजरत अली का हाथ पकड़ उन्हें अपना उत्तराधिकारी होने का ऐलान किया था। उन्होंने कहा था कि मैं तुम्हें कुरान और अपना वारिस (उत्तराधिकारी) दे रहा हूं। इसके बाद से ही मुस्लिम समुदाय में दो फिरके बने। सुन्नी और शिया।

सुन्नियों में पैगंबर के बाद चार खलीफा हुए, लेकिन शिया उन्हें खलीफा नहीं मानते हैं। वह इमाम को मानते हैं। यहीं से इमामत का दौर शुरू हुआ। हजरत अली समेत शियाओं में अब तक कुल 12 इमाम हुए हैं।

मैं श्रॉफ से पूछती हूं-आप इस्माइली मुस्लिम के साथ कुछ विवाद की बात कर रहे थे। वो क्या था बताएं?

वो कहते हैं, 'पांचवें इमाम तक इस्माइली मुस्लिम और इस्ना अशरी मुस्लिम एक थे। छठे इमाम जाफर सादिक के बाद दोनों में विवाद शुरू हो गया। ये विवाद इमाम जाफर सादिक के बड़े बेटे इस्माइली बिन जाफर और दूसरे बेटे मूसा काजिम में इमामत को लेकर हुआ था।

जिस समूह ने इस्माइली बिन जाफर को अपना इमाम माना, वो इस्माइली मुस्लिम कहलाए। मूसा काजिम को मानने वाले इस्ना अशरी बन गए। इस्ना अशरी 12 इमामों को मानते हैं। इनका कलमा सुन्नी मुस्लिम से अलग है। यह केवल उन्हीं हदीसों को मानते हैं, जो इमाम के जरिए आई हैं। इस्माइली मुस्लिम आज तक इमामत को मान रहे हैं। '

इसके बाद मैं सूरत में गुजरात के नामी वकील नजमुद्दीन मेघानी से मिली। उन्होंने मुझसे लगभग चार घंटे बात की। वह भी खोजा यानी इस्माइली मुस्लिम हैं। मिलते ही कहते हैं, 'हमारी मजहबी रिवायतें बहुत अलग हैं। जिन पर बात करने की इजाजत नहीं है।'

बहुत मशक्कत के बाद मैंने कुछ इस्माइली मुस्लिमों को इस बात पर राजी किया। पता चला कि इस्माइली मुस्लिमों का कलमा बाकियों से अलग है। वे लोग पांच वक्त की नमाज की जगह तीन वक्त की दुआ करते हैं। सुबह पांच बजे और शाम को सात बजे। शाम को दो दुआएं एक साथ होती हैं।

realpatidar.com

realpatidar.com

बाकी के मुस्लिम हाथ अगल-बगल में रखकर नमाज पढ़ते हैं, लेकिन ये हाथ खोलकर दुआ पढ़ते हैं। नमाज घर के अंदर या कहीं भी अता की जा सकती है, लेकिन दुआ सिर्फ जमातखाने में ही की जा सकती है।

वकील नजमुद्दीन मेघानी के मुताबिक अगर किसी इस्माइली मुसलमान को लगता है कि वह कम दुआ कर रहा है, तो वो एडवांस मेडिटेशन करता है। उसे इमाम की तरफ से एक शब्द दिया जाता है जिसे हर सुबह उठकर 4 से 5 बजे जपना होता है। यह शब्द कुरान से दिया

realpatidar.com

realpatidar.com

जाता है।

इतना कुछ जानने के बाद मेरे मन में ये सवाल आया कि दोपहर में इस्माइली मुस्लिम दुआ क्यों नहीं करते?

जवाब मिला- दोपहर का वक्त काम-धंधे पर लगने का होता है। मीटिंग होती हैं, कॉलेज और स्कूल का होता है। किसी का भी दुनियावी काम न रुके, वो तरक्की कर सके इसलिए दोपहर की जगह शाम को एक वक्त में दो दुआएं होती हैं। चूंकि हमें दीन और दुनिया को एक साथ लेकर चलने की हिदायत होती है इसलिए ऐसा करते हैं। '

नजमुद्दीन मेघानी से पूछती हूं कि मुट्ठी भर इस्माइली दुनिया के ताकतवर लोग कैसे बन गए? इस पर वह बताते हैं कि इस्माइली मुस्लिम की व्यवस्था को चलाने के लिए बाकायदा उनकी अपनी सरकार है।

मंत्रालयों की तरह विभाग बंटे हुए हैं। सभी विभाग अपने-अपने इलाके में ग्रामीण स्तर तक चाक-चौबंद होकर काम करते हैं।

श्रॉफ और मेघानी की मानें तो इमामत के इस उसूल को दोनों समुदाय मानते हैं कि हमें मजहबी और दुनियावी दोनों स्तर पर मजबूत होना है।

पूरी दुनिया में इस्माइली मुसलमान आगा खान डेवलपमेंट नेटवर्क (AKDN) के जरिए सामाजिक काम करते हैं। बस्तियां बसाते हैं, डैम बनाते हैं, सड़कें बनाते हैं, विकास कार्य करते हैं और ऐतिहासिक इमारतों की मरम्मत करते हैं।

पूरे समाज के बाद अंदरूनी तौर पर इस्माइली मुस्लिम के आधुनिक विकास के लिए उनके अलग-अलग विभाग हैं। जैसे हाउसिंग, कल्चर, हेल्थ, एजुकेशन, यूथ एंड स्पोर्ट्स। इसे चलाने के लिए काउंसिल होती है।

यह सुनिश्चित किया जाता है कि हर इस्माइली मुस्लिम के पास अपना घर होना चाहिए। इसके लिए वह कोऑपरेटिव बनाते हैं। सभी को घर देते हैं।

मेघानी बताते हैं कि हमारे यहां 50 साल से वैक्सीनेशन प्रोग्राम चलाया जा रहा है। इसके साथ सभी का मेडिकल इंश्योरेंस होना जरूरी होता है।

बिजनेस के लिए भी एक विभाग है, जिसे इकोनॉमिक प्रोग्रेस बोर्ड कहते हैं। सभी इसमें रजिस्टर्ड होते हैं। इसमें सभी को बताया जाता है कि आने वाले 20 साल में कौन सा बिजनेस फलेगा-फूलेगा, किस बिजनेस में पैसा लगाएं, कहां न लगाएं, किस बिजनेस को

realpatidar.com

realpatidar.com

करने के लिए कौन सी पढ़ाई करें। कौन सी ट्रेनिंग कहां से लें। बिजनेस शुरू करने और उसे विकसित करने के लिए भरपूर मदद दी जाती है। कम्युनिटी डेवलपमेंट मीट होते रहते हैं।

मेघानी के अनुसार हमारे बच्चे जब पांच साल के होते हैं तो उन्हें मजहबी शिक्षा के लिए जमात भेजना जरूरी होता है, ताकि वह इस्माइली के सभी तौर तरीके सीख लें। इसके लिए नर्सरी, केजी, पहली क्लास, दूसरी क्लास ऐसे बाकायदा पढ़ाई होती है। यह पढ़ाई सातवीं क्लास तक होती है।

हमारी मजहबी नींव है ईमानदारी, कड़ी मेहनत, काम से काम रखना, समय बर्बाद न करना, कोई अनैतिक काम न करना और भाईचारा।

फिजूल खर्ची की सख्त मनाही होती है। आज भी निकाह लाजिमी तौर पर जमातखाने में होते हैं। निकाह के बाद कोई बड़ा फंक्शन नहीं रखा जाता है। अमीर हो या गरीब निकाह के बाद सभी को एक-एक चॉकलेट दी जाती है। कोई पार्टी नहीं होती। इन कामों के लिए जमातखाने के मुखी जिम्मेदार होते हैं। जमातखानों को चलाने वालों को मुखी कहा जाता है और उनके सहायक को कामड़िया कहते हैं।

मुस्लिम स्कॉलर इरफान इंजीनियर बताते हैं कि गुजरात के मुसलमानों पर असगर अली इंजीनियर की किताब 'दि मुस्लिम कम्युनिटीज ऑफ गुजरात' के अनुसार इस्माइली मुस्लिमों का इतिहास रोचक है।

इनके यहां इमामत के दौर से ही वफादारी का बाकायदा टेस्ट होता रहा है। यह बहुत ही कड़ा टेस्ट है। इसमें इमाम के प्रति वफादारी कूट-कूट कर भरी है। वह इमाम के एक इशारे पर अपना जीवन बदल लेते हैं।

realpatidar.com

realpatidar.com

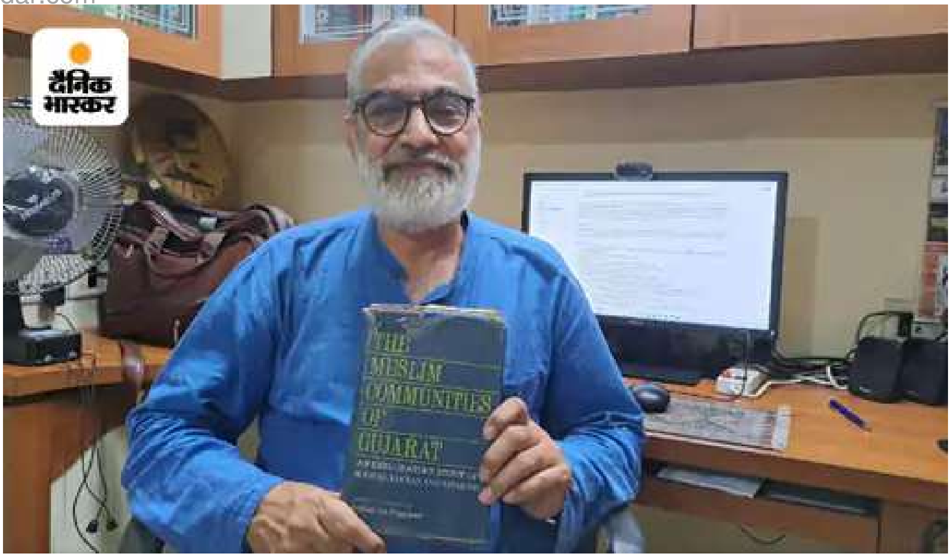

मुस्लिम स्कॉलर इरफान इंजीनियर बताते हैं कि इस्माइली मुस्लिम एक ऐसा समुदाय है, जिसे उनके ही समाज के लोग मुस्लिम नहीं मानते हैं। इनके लिए इमाम का कहा ही आखिरी है। कुरान की व्याख्या को यह इमाम के जरिए मानते हैं।

इमाम का संदेश उनके लिए अल्लाह का संदेश है। इमाम को ये विष्णु का अवतार मानते हैं। उनके बहुत सारे रीति-रिवाज हिंदुओं से मिलते हैं। यहां तक कि उनकी दुआ में जो बोला जाता है, उसमें हिंदू संस्कृति और संस्कृत से प्रेरित शब्द भी हैं। यह समुदाय बाकी मुसलमानों के बजाय आज भी खुद को हिंदुओं के करीब पाता है।

सबसे अहम बात यह है कि कोई भी इस्माइली मुस्लिम कभी अपने विवादों को लेकर अदालत में नहीं जाता है। कानूनी मसले सॉल्व करने के लिए भी इनके पास अलग विभाग है, वो अपने विवाद इसी विभाग में सुलझाते हैं। इनके यहां तलाक या लेनदेन के मसले यहीं सुलझाए जाते हैं। पूरी दुनिया में इसकी ब्रांच है।

realpatidar.com

realpatidar.com

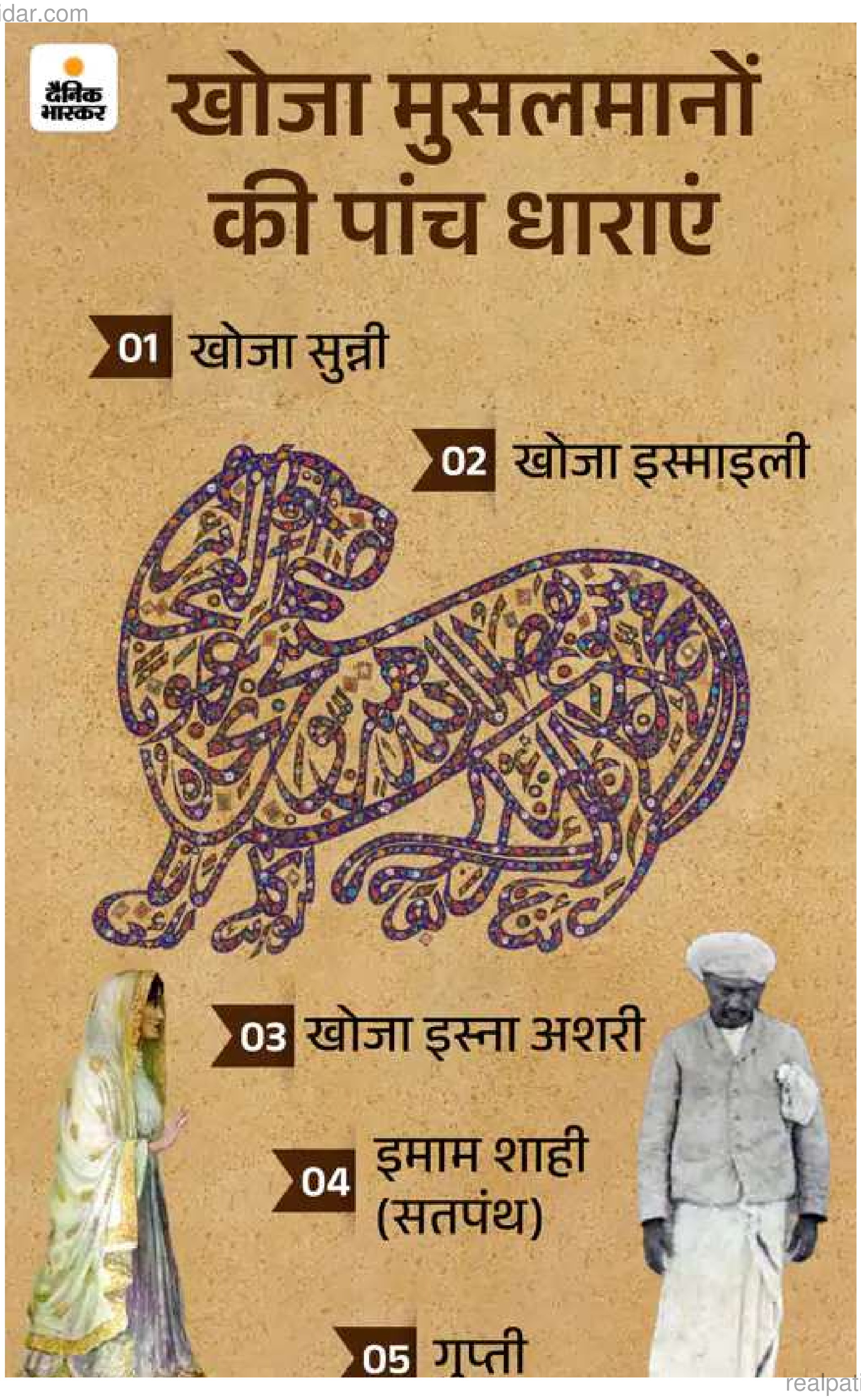

realpatidar.com

realpatidar.com

realpatidar.com

realpatidar.com

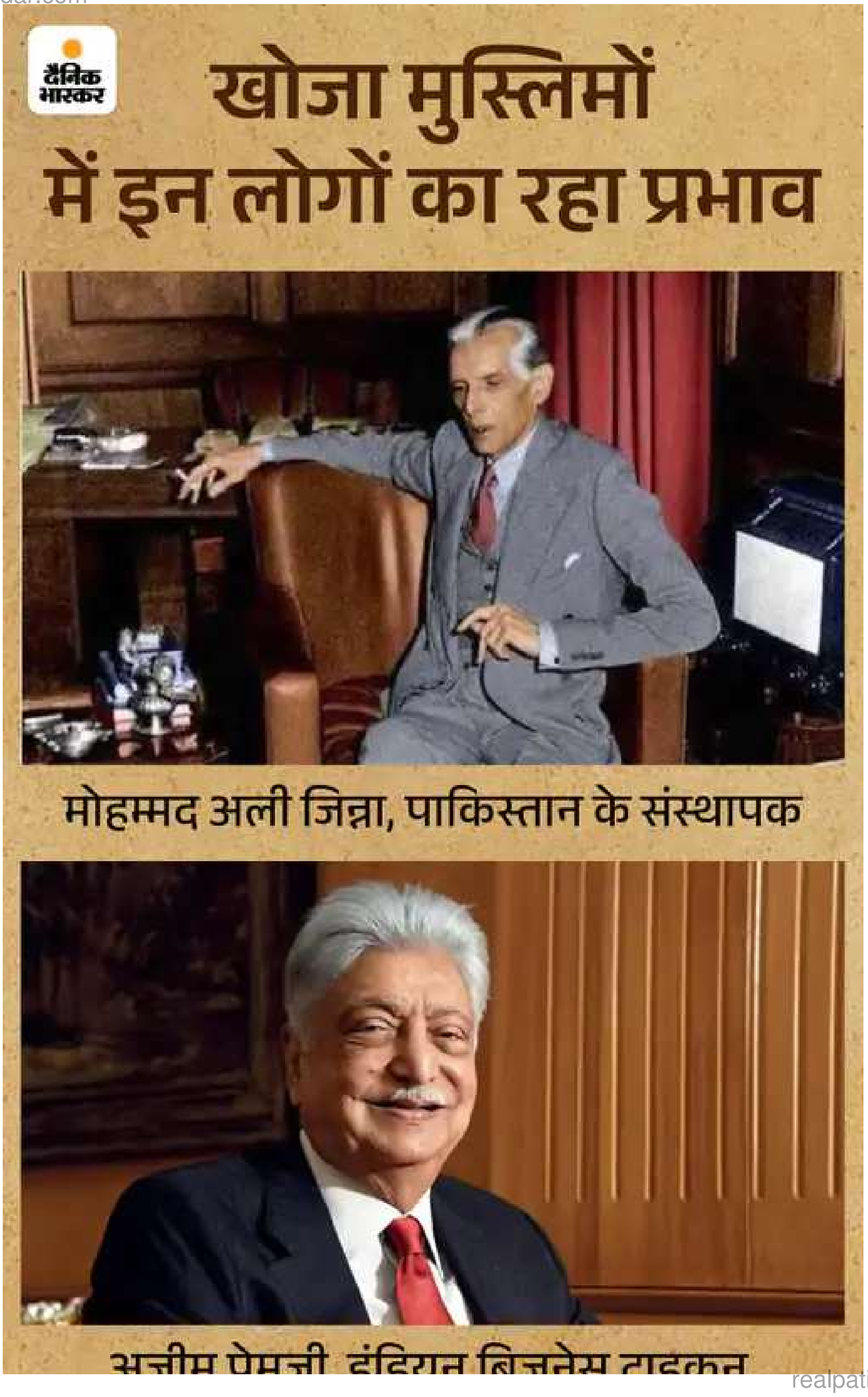

realpatidar.com

realpatidar.com

विप्रो लिमिटेड के अध्यक्ष

अलीक पदमसी, थिएटर आर्टिस्ट, एड गुरु

डॉ. सुल्तान प्रधान, सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट

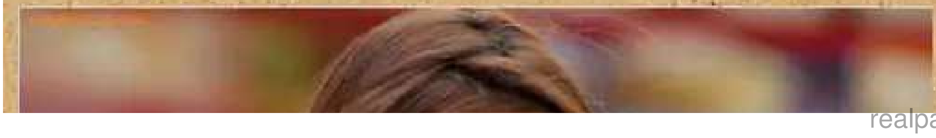

realpatidar.com

17/18

realpatidar.com

शाजान पदमसी , इंडियन एक्टर और मॉडल

ऐप खोलें

वीडियोऔर देखें

realpatidar.com